मैरी सीकोल

अश्वेत नर्स

मैरी सीकोल

लगभग दो सौ साल पहले मैरी नाम की एक छोटी लड़की वेस्ट इंडीज के जमैका में रहती थी. उसकी माँ एक बोर्डिंग हाउस चलाती थीं. वो एक घरेलू प्रकार का होटल था जहाँ लोग लंबे समय तक रह सकते थे. अक्सर मैरी, काम में अपनी माँ की मदद करती थी.

मैरी और उसकी माँ जमैका के सबसे बड़े शहर किंग्स्टन में रहती थीं.

उस समय जमैका पर अंग्रेजों का शासन था - भले ही ब्रिटेन वहां से हजारों मील दूर था. द्वीप पर अधिकांश अश्वेत लोग गुलाम थे. यहां तक कि स्वतंत्र अश्वेत लोगों, जैसे मैरी और उनकी मां को भी कुछ विशेष काम करने की अनुमति नहीं थी, जैसे वे वकील या डॉक्टर नहीं बन सकती थीं.

जल्द ही मैरी ने फैसला किया कि वो भी बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती थी. उसने अपनी माँ को करीबी से देखा और उनसे जो संभव था वो सीखा. उसने अपनी गुड़िया पर डाक्टरी का अभ्यास किया.

नियमों के बावजूद मैरी की मां एक डॉक्टर थीं. उन्होंने कोई आधिकारिक परीक्षा नहीं दी थी, लेकिन उन्होंने जमैका के पुराने डॉक्टरों से कई कौशल सीखे थे. वो खुद अपनी दवाइयां भी बनाती थीं.

मैरी की एक और महत्वाकांक्षा थी: यात्रा करना. अक्सर वो नक्शों को देखती थी और उन सभी जगहों का सपना देखती थी जहां वो जाना चाहती थी.

वो लंदन से प्यार करती थी, भले ही गलियों में बच्चे उसके रंग का मज़ाक उड़ाते थे.

किशोरावस्था में मैरी अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ ब्रिटेन आ गई.

बाद में मैरी ने बहामास, हैती और क्यूबा, सभी कैरिबियाई द्वीपों का दौरा किया.

1836 में, जब वो इकतीस वर्ष की थी, तब मैरी ने शादी की. उसके पति का नाम एडविन सीकोल था. एडविन की सेहत ठीक नहीं रहती थी. और जब वो बीमार पड़ता तो मैरी उसकी देखभाल करती थी.

जल्द ही एडविन की मृत्यु हो गई, और मैरी की मां की भी मृत्यु हो गई. मैरी ने बोर्डिंग हाउस संभाला. जब उसका घर जला तब भी उसने बड़ी बहादुरी दिखाई.

अब तक मैरी एक अच्छी डॉक्टर बन चुकी थीं, लेकिन वो हमेशा और अधिक सीखने की इच्छुक थीं. जब भी सेना या नौसेना का कोई सर्जन उसके घर पर रुकता था तो वह उससे बहुत सारे प्रश्न पूछती थी.

वो भी फिर से यात्रा करने के लिए तरसती थी. उसका भाई पनामा में रहता था. मैरी ने पनामा जाने का फैसला किया. वो देखना चाहती थी कि वहां कैसा माहौल था.

उस समय पनामा एक खतरनाक जगह थी. वहां से तमाम यात्री गुजरते थे.

मैरी के भाई ने यात्रियों के लिए एक होटल चलाता था, जो वास्तव में सिर्फ एक डाइनिंग हॉल था. जब मैरी पहुंची, तो वहां कोई अतिरिक्त बिस्तर तक नहीं था.

पहली रात वह अपनी नौकरानी के साथ टेबल के नीचे सोई. उसका भाई और उसका नौकर ऊपर सोए.

जल्द ही वहां मैरी के कौशल की जरूरत पड़ी. शहर में कोई डॉक्टर नहीं था. जब हैजा नामक एक खतरनाक बीमारी फैली, तो मैरी ही एकमात्र व्यक्ति थी जो उस मर्ज़ के बारे में जानती थी. जल्द ही हर कोई उससे मदद और दवाइयाँ माँग रहा था.

बीमारी तेजी से फैली. मैरी ने दिन-रात काम किया. वो खुद बीमार पड़ गई लेकिन सौभाग्य से वो जल्द ही ठीक हो गई.

जब शहर हैजे से मुक्त हो गया, तो मैरी ने अपना खुद का डाइनिंग हॉल खोलकर अपनी जीविका कमाने का फैसला किया. उसे किराए पर केवल एक गिरी हुई झोपड़ी ही मिली. उसने उसे चमकीले ढंग से सजाया और एक बार में पचास लोगों के लिए भोजन पकाया. उसने इसे "ब्रिटिश होटल" नाम दिया.

ब्रिटिश होटल अच्छा चला, लेकिन मैरी ने पनामा छोड़ने और जमैका लौटने का फैसला किया.

वापस जमैका में पीले बुखार का प्रकोप था. जल्द ही, मैरी का बोर्डिंग हाउस रोगियों से भर गया. मैरी को पास के एक सैन्य शिविर में नर्सिंग करने के लिए भी कहा गया.

जब बुखार का प्रकोप ख़त्म हुआ तो मैरी ने फिर से यात्रा शुरू कर दी. कई महीनों तक वो दक्षिण अमेरिका में एस्क्रिबैनोस नामक स्थान पर रही, जहाँ एक सोने की खदान थी.

फिर 1854 में, जब वह उनतालीस वर्ष की थी, मैरी ने फिर से लंदन का दौरा किया.

उस वर्ष ब्रिटेन और फ्रांस ने तुर्की के साथ मिलकर रूस के खिलाफ युद्ध छेड़ा था. काले सागर के किनारे क्रीमिया नामक क्षेत्र में लड़ाई हो रही थी.

वहाँ के सेना शिविरों में हैजे जैसी बीमारियाँ एक भयानक समस्या थीं. युद्ध से अधिक सैनिक, रोगों से मर रहे थे.

प्रसिद्ध नर्स फ्लोरेंस नाइटिंगेल गंदगी और बुरी तरह से व्यवस्थित अस्पतालों को सुधारने के लिए पहले से ही क्रीमिया जा चुकी थीं. लेकिन वहां कई अन्य नर्सों की जरूरत थी. मैरी ने वहां स्वयंसेवा करने का फैसला किया.

हर दिन मैरी ने अपने इंटरव्यू का इंतज़ार किया. लेकिन उसे किसी ने नहीं बुलाया. अंत में उसे बताया गया कि उसकी जरूरत ही नहीं थी. मैरी ने सोचा कि शायद इसलिए हुआ क्योंकि वो काली थी.

फिर भी मैरी ने हार नहीं मानी. उसके पास केवल नाव यात्रा के लिए पर्याप्त धन था, लेकिन उसने वहां जाने का फैसला किया. उसे उम्मीद थी कि जब वह वहाँ पहुँचेगी तो उसे अपना जीवन यापन करने का कोई रास्ता मिल जाएगा.

मैरी ने क्रिमीआ जाने के लिए लिए खुद पैसे जुटाने की कोशिश की.
पर किसी ने उसकी मदद नहीं की.

वो एक लंबी यात्रा थी. अंत में मैरी बालाक्लाव नामक स्थान पर पहुँची. एक दोस्त, थॉमस डे के साथ मिलकर, उसने सैनिकों के लिए एक दुकान और डाइनिंग हॉल खोलने का फैसला किया.

पहले तो मैरी के रहने के लिए कोई जगह नहीं मिली. वो सेना के जहाज पर सोती थी, और तट पर घायलों की देखभाल में मदद करती थी.

उनकी दुकान जल्द ही सैनिकों और स्थानीय लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हुई. सैनिकों को बहुत कम खाना मिलता था. कुछ अन्य दुकाने थीं लेकिन उनकी कीमतें बहुत अधिक थीं. मैरी का खाना सस्ता और पौष्टिक था.

मैरी और थॉमस को अपनी दुकान बनाने की जरूरत थी. लेकिन वहां निर्माण सामान मिलना मुश्किल था. यहां तक कि उन्होंने बंदरगाह पर पड़े कूड़ा-करकट का इस्तेमाल भी किया. आखिर दुकान बनकर तैयार हुई.

भोजन के साथ-साथ मैरी की दुकान में जूते, टोपी, मोजे और काठी जैसी चीज़ें भी मिलती थीं. वहां चोरी एक बड़ी समस्या थे. एक बार मैरी ने पाया कि उसकी चालीस बकरियाँ और सात भेड़ें गायब हो गई थीं!

बालाक्लाव में जीवन खतरनाक था. मैरी की धोबिन पास में ही रहती थी. एक रात धोबिन और उसके परिवार की हत्या कर दी गई. मैरी अक्सर डर जाती थी, इसलिए थॉमस ने उसे एक बंदूक दी.

हालांकि दुकान बहुत व्यस्त थी, मैरी का मानना था कि उसका मुख्य काम बीमारों की मदद करना था.

उसने घायल और मरने वाले सैनिकों को युद्ध के मैदान में खोजा, तब भी जब बंदूकों की फायरिंग चल रही होती थी.

उससे जितना बना उसने हरेक सैनिक की मदद की, चाहे वो किसी भी सेना का हो. इस काम के लिए मैरी को कोई पैसा नहीं मिला.

हर सुबह मैरी की झोपड़ी में सैनिकों की भीड़ उमड़ती थी जो उससे दवा माँगने आते थे.

मैरी घायल सैनिकों से उनकी झोंपड़ियों में मिलने जाती थी. वो उनके लिए खाने-पीने के लिए चीज़ें लेकर जाती थीं. अक्सर मैरी को पैसे नहीं मिलते थे. मैरी इतना काम करती थी की उसे अक्सर खाने या सोने तक का समय नहीं मिलता था.

आला अफसरों से लेकर आम सैनिकों तक सभी 'मदर सीकोल' के दीवाने हो गए थे.

1856 में युद्ध समाप्त हो गया. मैरी खुश थी, लेकिन वो चिंतित भी थी. उसने और थॉमस ने अपनी दुकान के लिए बहुत सी चीजें खरीदी थीं जिनकी अब किसी को जरूरत नहीं है. उन्हें उन चीज़ों को बहुत कम दाम पर बेचना पड़ा. कुछ चीज़ें तो वे बिल्कुल भी नहीं बेच सके.

मैरी ब्रिटेन के लिए रवाना हुई. उसके पास लौटने के लिए वहां कोई ठिकाना नहीं था और न ही पैसे थे.

लंदन में मैरी ने रहने के लिए एक जगह खोजी और उन्होंने अपने जीवन के बारे में एक किताब लिखना शुरू की. उसका नाम था "वंडरफुल एडवेंचर्स ऑफ मिसेज सीकोल" और वो 1857 में प्रकाशित हुई. किताब फ़ौरन हिट हुई और एक बेस्टसेलर बनी.

अब तक मैरी ने क्रीमिया में जिन सैनिकों की मदद की थी, उनमें से कई को पता चला कि मैरी के पास पैसों की बहुत कमी थी. वे मैरी की दया के बदले में अब उनकी मदद करना चाहते थे.

जुलाई 1857 में मैरी के लिए धन जुटाने के लिए लंदन के एक संगीत हॉल में एक समारोह आयोजित किया गया था.

चार प्रदर्शन हुए. हरेक के टिकट पूरी तरह बिक गए. जब मैरी वहां पहुंची तो भीड़ ने उनकी जय-जयकार की.

लेकिन जिस कंपनी ने त्योहार का आयोजन किया था वो दिवालिया हो गई और अंत में मैरी को बहुत कम पैसा ही मिला.

क्रीमियन युद्ध ने मैरी के स्वास्थ्य को कमजोर कर दिया था, लेकिन उन्होंने काम करना जारी रखा. उनके दोस्त अभी भी उनकी मदद के लिए पैसे जुटाने के लिए दृढ़ थे.

अंत में मैरी के पास दो घर रखने के लिए पर्याप्त धन हुआ - एक लंदन और दूसरा जमैका में. उन्होंने अपना शेष जीवन इन्हीं दो स्थानों में बिताया. उनसे हमेशा बहुत सारे आगंतुक मिलने आते थे. उनमें अक्सर वे सैनिक होते थे जिनकी जान मैरी ने बचाई थी.

आगे के तथ्य

जमैका

जमैका कैरिबियन में एक द्वीप है. 1494 तक यूरोप के लोगों को उसके अस्तित्व के बारे में तक नहीं पता था. फिर क्रिस्टोफर कोलंबस ने उसे खोज निकाला. उसके बाद स्पेन ने जमैका पर अधिकार जमाया. 1655 में, जमैका को ब्रिटेन ने जीत लिया. जमैका, व्यापारियों, दास व्यापारियों और समुद्री लुटेरों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया. 1833 में वहां गुलामी को समाप्त कर दिया गया, लेकिन ब्रिटेन ने 1962 तक जमैका पर शासन किया.

दास - व्यवसाय

गुलाम होने का मतलब था कि आपका कोई और मालिक था. आपके अपने कोई अधिकार नहीं थे. आपको अपना कोई भी सामान खरीदने की अनुमति नहीं थी और आपको अपना पूरा जीवन अपने स्वामी की सेवा में बिताना पड़ता था.

कई वर्षों तक ब्रिटिश व्यापारियों ने गुलामों को बेचकर बहुत पैसा कमाया. उन्होंने पश्चिम अफ्रीका के लोगों को ज़बरदस्ती पकड़ा और उन्हें कैरिबियन भेजकर उन्हें बेच दिया.

प्रसिद्ध फ्लोरेंस नाइटिंगेल

फ्लोरेंस नाइटिंगेल और मैरी सीकोल दोनों ने क्रीमियन युद्ध के दौरान बहुत महत्वपूर्ण काम किया और कई सैनिकों की जानें बचाईं.

लेकिन युद्ध समाप्त होने के बाद भी, फ्लोरेंस ब्रिटेन में मैरी की तुलना में कहीं अधिक प्रसिद्ध थीं. शायद ऐसा इसलिए था क्योंकि फ्लोरेंस गोरी थीं, और एक अमीर अंग्रेजी परिवार से आती थीं. फ्लोरेंस नाइटिंगेल का नाम आज बहुत से लोग जानते हैं लेकिन मैरी सीकोल का नाम बहुत कम लोगों ने ही सुना होगा.

मैरी सीकोल के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

1805 मैरी जेन ग्रांट का जन्म जमैका की राजधानी किंग्स्टन में हुआ था.
उनकी माँ एक स्वतंत्र अश्वेत महिला थीं और उनके पिता एक स्कॉटिश सेना अधिकारी थे.

1836 मैरी ने एडविन होरेशियो सीकोल से शादी की. एडविन का जल्द ही देहांत हो गया.

1850 जमैका में हैजे का प्रकोप आया. मैरी ने बीमारियों के इलाज के बारे में बहुत कुछ सीखा.

1853 मैरी, पनामा से जमैका लौटी. वहां पीत ज्वर का प्रकोप था.

1854 ब्रिटेन और फ्रांस ने रूस के खिलाफ युद्ध की घोषणा की. इसे क्रीमियन युद्ध के रूप में जाना गया.

1854 फ्लोरेंस नाइटिंगेल नर्सों के एक दल को क्रीमिया ले गईं.
मैरी की स्वयंसेवक के रूप में काम करने की पेशकश को ठुकरा दिया गया.

1855 मैरी क्रीमिया के लिए रवाना हुई. वहां उन्होंने बालाक्लावा के अस्पताल में मदद की
और एक दुकान और भोजन हॉल खोला.

1856 क्रीमिया युद्ध समाप्त हुआ. मैरी इंग्लैंड लौटकर गईं.

1857 मैरी के लिए धन जुटाने के लिए लंदन में एक भव्य सैन्य महोत्सव आयोजित किया गया.

1857 मैरी की पुस्तक "वंडरफुल एडवेंचर्स ऑफ मिसेज सीकोल" प्रकाशित हुई. पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई.

1881 मैरी सीकोल का निधन हुआ. उन्हें लंदन में दफनाया गया.